स्पर्श 2015

कुष्ठ मुक्ति अभियान

19 जुलाई से 2 अक्टूबर 2015

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, छत्तीसगढ़

परिचय :-

कुष्ठ जीवाणु जन्य रोग है परन्तु समाज में व्याप्त अवैज्ञानिक मान्यताओं व अंधविश्वासों के फलस्वरुप कुष्ठ रोग को छुपाया जाता हैं, जिससे इस रोग की सही स्थिति का आंकलन कठिन होता हैं। छत्तीसगढ़ राज्य में कुष्ठ की समस्या अभी भी बनी हुई हैं। राज्य में वर्ष 2001 में कुष्ठ प्रभाव दर 8.2 प्रति दस हजार जनसंख्या थी, जो कि माह मार्च 2015 में प्रभाव दर 2.27 प्रति दस हजार हैं। वर्तमान में राज्य में कुल 6306 रोगियों को बहुऔशधी उपचार एमडीटी के अन्तर्गत नियमित उपचार निशुल्क दिया जा रहा हैं। तथा वर्श 2005-06 से 92214 रोगियों को उपचार कर कुष्ठ मुक्त किये जा चुके है। स्पर्श कार्यक्रम का उद्देश्य है, कि समाज में छिपे सभी अनुपचारित कुष्ठ रोगियों को खोजकर उन्हें बहुऔषधि उपचार नियमित एवं पूर्ण प्रदान कर रोग पर नियंत्रण कर लिया जायें ताकि रोग का प्रसार रुक जायें व रोग की प्रभावी दर एक व्यक्ति अथवा कम प्रति 10,000 जनसंख्या हो जावे तथा कुष्ठ से होने वाली विकृतियों को शल्यक्रिया के द्वारा दूर कर रोगियों को समाज के मुख्य धारा में शामिल किया जा सके।

अतः स्पर्श अभियान अंतर्गत विकृति सुधार शल्य चिकित्सा अभियान, नये कुष्ठ पहचान अभियान, स्वास्थ्य कर्मी कुष्ठ प्रशिक्षण अभियान, बच्चो में कुष्ठ की पहचान, उपचार एवं प्रतिरोध अभियान, प्रशिक्षण अभियान, जनजागृति अभियान यह छः कार्यक्रम स्पर्श अंतर्गत 19 जुलाई से 02 अक्टूबर 2015 तक अभियान के रुप में संचालित किये जायेगें।

स्पर्श कार्यक्रम की रुपरेखा :-

सही समय पर कुष्ठ रोग की पहचान निदान एवं उपचार किया जाना कुष्ठ की रोकथाम एवं विकलागंता से बचाव हेतु अत्यन्त आवश्यक हैं। स्पर्श कार्यक्रम के तहत् 19 जुलाई 2015 से 02 अक्टुबर 2015 तक समग्र अभियान चलाकर निम्नलिखित रणनीतियों के आधार पर पूरे प्रदेश भर में कार्यवाही की जायेगी।

विकृति सुधार शल्य चिकित्सा अभियान

राज्य में कुष्ठ से विकलांगता एवं विकृत होने वाले मरीजों की संख्या वर्ष 2014-15 अनुसार 694 हैं। वर्तमान में लगभग 200 मरीज ऐसे हैं जिनकी शल्य चिकित्सा से इलाज संभव हैं, अतः स्पर्श अभियान के अन्तर्गत 02 अक्टूबर 2015 तक क्षेत्रीय कुष्ठ अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान रायपुर तथा द लेप्रेसी मिशन बैतलपुर आदि संस्थाओं में फिजियोथेरेपी एवं शल्य क्रिया कर निशुल्क इलाज किया जायेगा।

नये रुग्ण पहचान अभियान

कुष्ठ को छुपाने के कारण मरीज की पहचान में कठिनाई यह विशेष समस्या हैं। उड़ीसा राज्य से लगे सीमावर्ती क्षेत्रों में कुष्ठ का प्रभाव अधिक हैं। अतः अधिक प्रभाव वाले 72 विकास खंण्डों में एन.एम.ए. एवं एन.एम.एस के माध्यम से मितानिन प्रशिक्षण कर उनके द्वारा घर-घर जाकर संदेहजनक कुष्ठ मरीजों का परीक्षण कर पहचान की जायेगी। पहचान अभियान 15 अगस्त से 15 सितम्बर 2015 तक चलेगा। स्पर्श अभियान के तहत् खोज दलों के द्वारा चिन्हित किये गयें शंकास्पद व्यक्ति के रोग की सत्यापन करने हेतु प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में सत्यापन शिविर का आयोजन दिनांक 15 अगस्त से 02 अक्टूबर 2015 तक किया जायेगा। जिसमें जिला कुष्ठ अधिकारी / खण्ड चिकित्सा अधिकारी / चिकित्सा अधिकारी द्वारा रोगियों का सत्यापन कर चिकित्सा सुनिश्चित की जायेगी।

प्रशिक्षण अभियान

स्पर्श अभियान की कार्ययोजना को मूर्त रुप प्रदान करने हेतु खोज दल बनाया जायेगा, जो घर-घर जाकर कुष्ठ मरीजों हेतु पहचान करेगा। विकास खण्ड चिकित्सा अधिकारियों को कुष्ठ की पहचान एवं उपचार हेतु प्रशिक्षण दिया जायेगा। खोज दलो को प्रशिक्षण प्रदान करने के लिये विकास खण्ड चिकित्सा अधिकारी द्वारा एन.एम.एस. एवं एन.एम.ए. को मास्टर ट्रेनर के रुप में प्रशिक्षित किया जायेगा। अन्तर्गत गठित टीम के सदस्यों को जिला स्तर पर कुष्ठ पहचान एवं निदान हेतु प्रशिक्षण दिया जायेगा। विकास खण्ड चिकित्सा अधिकारी एवं राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम दल का प्रशिक्षण- 25 जूलाई से 31 जूलाई 2015 मास्टर ट्रेनर /एन.एम.एस. का प्रशिक्षण/ .- 31 जूलाई से 07 अगस्त 2015 खोज दलों का प्रशिक्षण - 07 अगस्त से 15 अगस्त 2015 बच्चों में कुष्ठ की पहचान करने हेतु राष्ट्रीय बाल सुरक्षा कार्यक्रम अन्तर्गत गठित टीम के सदस्यों को जिला स्तर पर कुष्ठ पहचान एवं निदान हेतु प्रशिक्षण दिया जायेगा।

बाल कुष्ठ अभियान

राश्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम अन्तर्गत गठित दलों द्वारा स्कूलों एवं आंगनबाड़ी केंद्रों के बच्चों में कुष्ठ रोग पहचान कर प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केंन्दों के माध्यम से उपचार सुनिश्चित किया जायेगा। स्कूलों में कुष्ठ संबधी जानकारी हेतु शिविर एन.एम.ए. एवं एन.एम.एस के माध्यम से आयोजित किया जायेगा।

उपचार एवं रोग प्रसार प्रतिबंध अभियान

कुष्ठ सत्यापन शिविर में सत्यापित मरीजों की गंभीरता अनुसार चिकित्सा की पद्धति सुनिश्चित की जायेगी। जिन रोगियों में विकलांगता के लक्षण नहीं हैं, उन्हें दवाईयों द्वारा चिकित्सा की जायेगी। तथा विकलांगता के लक्षण होने की स्थिति में शल्य क्रिया से चिकित्सा हेतु उच्च स्तर के संस्थान में भेजा जायेगा। जिन रोगियों में कुष्ठ पाया जाता है, उनका निशुल्क दवाईयों के साथ इलाज किया जायेगा तथा संपर्क में आने वाले व्यक्तियों को, विशेष रुप से उनके परिवार वाले को उपचार संबधी, बीमारी संबधी, प्रतिरोध संबधी जानकारी दी जायेगी एवं उनकी भी सतत निगरानी की जायेगी।

जन-जागरुकता अभियान

निम्न माध्यमों का उपयोग करते हुए जनजागरुकता अभियान चलाया जायेगा।

कुष्ठ मुक्ति जनजागरुकता रथ यात्रा :- कुष्ठ मुक्ति अभियान को जन-जन तक पहुचाने के लिए जनजागरुकता रथ यात्रा का संचालन 01 अगस्त से किया जायेगा। जिसके माध्यम से घर-घर-व्यक्ति-व्यक्ति कुष्ठ रोग की जांच कराने के लिए एंव सभी जिलो को कुष्ठ रोग से मुक्ति दिलानें के लिए नारे लगाते हुए जनजागृति लाने का प्रयास किया जायेगा।

ग्राम पंचायत के माध्यम से मुनादी :- प्रदेश के सभी ग्राम पंचायतों मे कुष्ठ मुक्ति अभियान को जन-जन तक पहुचाने के लिए हर शिविर से पहले मुनादी कराया जायेगा, जिससे ग्रामीण अंचल में निवासरत व्यक्तियों को कुष्ठ रोग से संबधित महत्वपूर्ण जानकारियाँ उपलब्ध हो सके।

स्कूलों में जन-जागरुकता मुहिम

कुष्ठ मुक्ति अभियान को सुचारु रुप से गति प्रदान करने के लिए अभियान के पूर्ण समय सभी स्कूली छात्र-छात्राओं को कुष्ठ रोग से जुड़ी जानकारियाँ उपलब्ध कराकर अपने आस-पास के व्यक्तियों एवं अपने परिजनों को कुष्ठ मुक्ति अभियान को सफल बनानें के लिए उचित मार्गदर्शन प्रदान किया जायेगा।

सामुदायिक भागीदारी

सूचना शिक्षा संचार के द्वारा समाज के लोगों की भागीदारी सुनिश्चित की जा सकती हैं जैसे स्वास्थ्य प्रदाता / शिक्षक / रोगी और समुदाय के बीच समन्वय कर इनकी कुष्ठ उन्मूलन कार्यक्रम में भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी हैं।

अन्तर्राज्यीय समन्वयः-

राज्य के उडिसा से लगे जिलों में कुष्ठ की समस्या अधिक देखी गई है अतः पड़ोसी जिलों के स्वास्थ्य अमलों से समन्वय कर कुष्ठ मुक्ति हेतु सहयोग लिया जायेगा।

मितानिन की भूमिका

01. कुष्ठ की रोकथाम के लिए मितानिन की भूमिका महत्वपूर्ण हैं। कुष्ठ रोग का कलंक मिटाने के लिए लोगों मे जागरुकता पैदा करना एवं स्वेच्छा से निदान एवं उपचार करवाने के लिए प्रोत्साहित करना।

02. मितानिन द्वारा दल बनाकर घर-घर जाकर कुष्ठ रोग से ग्रस्त व्यक्ति तथा रोग के जटिलताओं की पहचान की जाती हैं।

03. मितानिन सुनिश्चित करती है कि रोगी नियमित रुप से उपचार करवा रहा हैं। तथा रोगी को उपचार पूरा करवाने के लिए प्रोत्साहित करती हैं।

04. कुष्ठ रोग के प्रति समाज में चल रहीं गलत सोच को दूर करना एवं सही जानकारी देना।

मितानिन को प्रोत्साहन राशि :-
राश्ट्रीय कुष्ठ उन्मुलन कार्यक्रम के तहत् नये रोगी खोजनें में मदद करने पर मितानिन को प्रोत्साहन राशि दी जाती हैं। यदि रिफर किया गया व्यक्ति जांच के बाद कुष्ठ रोग का मरीज निकलता है तो पी.बी. के प्रकरण में मितानिन को रु.300/- एवं एम.बी. प्रकरण में रु.500/- देने का प्रावधान हैं। यह राशि किस्तों में दी जाती हैं।

एन.एम.एस. की भूमिका :-

01. विकासखंण्ड में कुष्ठ नियंत्रण कार्यक्रम का सुपरविजन एवं मॉनिटरिंग।
02. विकास खण्ड चिकित्सा अधिकारी के साथ रहते हुए कुश्ठ नियत्रंण कार्यक्रम में होने वाली कठनाई की पहचान एवं निराकरण।
03. स्वास्थ्य कर्मियों का प्रशिक्षण कर उनकी कार्यकुशलता बढ़ाना एवं कुष्ठ प्रभावितों का कंफरमेशन व वेलिडेशन करना।
04. कुष्ठ प्रभावित व्यक्ति का समय अनुसार/पूर्ण समयाअवधि में उपचार सुनिश्चित करना।
05. सेक्टर से सही रिपोर्ट प्राप्त कर विकास खंण्ड की रिपोर्ट बनाकर जिले की मासिक बैठक में उपस्थिति एवं रिपोर्ट प्रस्तुति।
06. विकास खण्ड में एमडीटी, एमसीआर, केयर कीट आदि की आवश्यक्ता का आंकलन कर मांग पत्र जिले को प्रस्तुत करना।
07. कुष्ठ कार्यक्रम के यूएसआईएस/डीपीएमआर रिपोर्ट रिकार्ड अपडेट करना।
08. विकासखण्ड के सेक्टर मीटिंग में उपस्थित रहकर कुष्ठ संबधी चर्चा एवं स्वास्थ्य कार्यकर्ता को निर्देशित करना।
09. मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी/जिला कुष्ठ अधिकारी/विकासखण्ड चिकित्सा अधिकारी के निर्देशानुसार कुष्ठ का कार्य करना।

एन.एम.ए. की भूमिका :-

01. सेक्टर स्तर पर कुष्ठ नियंत्रण कार्यक्रम के एसआईएस एवं डीपीएमआर रिपोर्ट / रिकार्ड अपडेट करना।
02. सेक्टर स्तर पर उपचाररत कुष्ठ प्रभावितों को नियमित उपचार एवं आवश्यकतानुसार, एमसीआर, गॉगलस, स्पलीट, अलसर केयर कीट उपलब्ध कराना।
03. सेक्टर का सही मासिक / एमडीटी / डीपीएमआर / लाजिस्टिक आंकलन कर आवश्यक्ता अनुसार मांगपत्र प्रस्तुत करना / संधारण करना।
04. सेक्टर में उपचारत कुष्ठ विकृति के मरीजों की सूची बनाकर सुधार शल्य क्रिया हेतु नजदीकी संस्था में भेजा जाना।
05. मितानिनों का सहयोग लेकर सेक्टर अंतर्गत जनजागरण करना।

अभियान अवधि में राज्य स्तर से निरीक्षक नियुक्त कर जिलों में किये जा रहे कार्यो की सतत् निगरानी की जायेगी। तथा पाक्षिक बैठक कर विकासखण्डों में संचालित कार्यो की समीक्षा की जायेगी।

आशा है कि 19 जुलाई से 2 अक्टूबर 2015 तक चलने वाले इस अभियान से राज्य में कुष्ठ मुक्ति के स्वप्न को साकार करने में योग्य दिशा एवं सफलता मिलेगीं।

समय सीमा

1	विकृति सुधार शल्य चिकित्सा अभियान	22 जूलाई से 02 अक्टुबर 2015
2	नये रुग्ण पहचान अभियान	15 अगस्त से 15 सितम्बर 2015
3	प्रशिक्षण अभियान अ) विकास खण्ड चिकित्सा अधिकारी एवं राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम दलों का प्रशिक्षण ब) मास्टर ट्रेनर का प्रशिक्षण स) खोज दलों का प्रशिक्षण	25 जुलाई से 15 अगस्त 25 जुलाई से 31 जूलाई 31 जुलाई से 07 अगस्त 07 अगस्त से 15 अगस्त
4	बाल कुष्ठ अभियान	31 जुलाई से 02 अक्टुबर
5	उपचार एंव रोग प्रसार प्रतिबंध अभियान	संपूर्ण समय
6	जन-जागरुकता अभियान	संपूर्ण समय

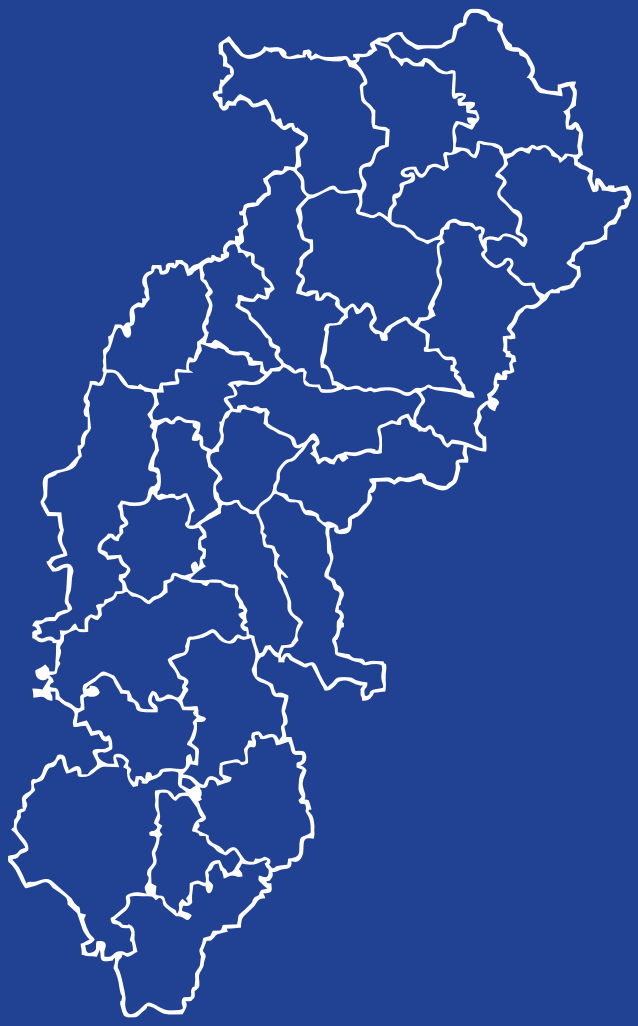

घर-घर में खुशहाली हो, मन में हो विश्वास,

कुष्ठ मुक्त राज्य में
सबका हो विकास